10/01/2022

सन्दर्भ समूह (Reference Group) -

संदर्भ समूह शब्द का प्रयोग सबसे पहले हरबर्ट हाईमैन (Herbert Hymen) ने सन् 1942 में किया। इसके बाद शेरिफ (Sherif) ने अपनी पुस्तक "सामाजिक मनोविज्ञान की रूपरेखा" में सन्दर्भ समूह की अवधारणा को व्यापक रूप से प्रस्तुत किया, शेरिफ ने मनोवैज्ञानिक आधार पर समूहों को दो मुख्य भागों में विभाजित किया - (क) सदस्यता समूह (Membership Group) तथा (ख) सन्दर्भ समूह (Reference Group)। इसे इस प्रकार कहा जा सकता है कि व्यावहारिक रूप से हम जिन समूहों में रहकर प्रत्यक्ष रूप से अपना जीवन व्यतीत करते हैं वे हमारे सदस्यता समूह होते हैं। दूसरी ओर कुछ समूह ऐसे होते हैं जिनके हम सदस्य तो नहीं होते लेकिन हम उन्हें अपना आदर्श मानकर उन्हीं को अपने व्यवहार का आधार समझने लगते हैं। इन समूहों का व्यक्ति के ऊपर इतना अधिक प्रभाव होता है कि साधारणतया इसके व्यवहार और मनोवृत्तियाँ उसी समूह के सदस्यों के व्यवहारों और मनोवृत्तियों के अनुसार ढलने लगती हैं। इन्हीं समूहों को हम सन्दर्भ समूह (Reference Group) कहते हैं। उदाहरण के लिए - यदि हम एक मध्यम वर्ग के सदस्य हों तो यह मध्यम वर्ग हमारा सदस्यता समूह होगा और इस रूप में

यह इसमें लोगों की आशा कि हमारे
व्यवहार करने के ढंग विशेष गुण
मनोवृत्तियाँ तथा विचार इसी वर्ग
के अनुरूप हों। इसके विपरीत
यह भी सम्भव है कि हम
मानसिक तौर पर अपने समूह
की विशेषताओं को न अपनाकर
मानसिक रूप से अपने से
उच्च किसी दूसरे वर्ग के
कुछ लोगों को अपना आदर्श
समझने लगें। इस स्थिति में
उच्च वर्ग के ये लोग हमारा
सन्दर्भ समूह बन जायेगा तथा
हम उन्हीं के व्यवहारों मनोवृत्तियों
तथा जीवन-शैली को ग्रहण करना
आरम्भ कर देंगे। इससे स्पष्ट
होता है कि व्यक्ति के व्यवहार और
मनोवृत्तियाँ केवल उसी समूह के सदस्य
से प्रभावित नहीं होते जिसका कि
वह सदस्य है बल्कि किसी ऐसे समूह
से भी प्रभावित हो सकती है जिससे
व्यक्ति मानसिक रूप से जुड़ जाता है।
यही समूह सन्दर्भ-समूह कहा जाता
है। इसी आधार पर विभिन्न विद्वानों
ने सन्दर्भ-समूह को परिभाषित
किया है।
जो इस प्रकार है:

शेरिफ तथा शेरिफ (M. Sherif and C.W. Sherif) ने अपनी पुस्तक An outline of Social Psychology) में सन्दर्भ समूह के सम्बन्ध में लिखा है कि "सन्दर्भ समूह वे समूह हैं जिनमें व्यक्ति अपने आपको या तो उनके एक अंश के रूप में जोड़ लेता है अथवा मनोवैज्ञानिक रूप से वह उनमें जुड़ने की आकांक्षा रखता है।" बोलचाल की सामान्य भाषा में सन्दर्भ समूह वे होते हैं जिनके साथ व्यक्ति अपनी एकरूपता स्थापित करता है अथवा एकरूपता स्थापित करना चाहता है।" इससे स्पष्ट होता है कि सन्दर्भ समूह का सम्बन्ध हमारी वास्तविक सदस्यता से नहीं होता बल्कि हमारी मनोवैज्ञानिक सदस्यता से होता है।

क्लाइनबर्ग (Klineberg) के अनुसार "सन्दर्भ समूह वह समूह है जिसके आदर्शों, मूल्यों तथा व्यवहार के ढंगों को हम आदर्श मान कर उससे मनोवैज्ञानिक तौर पर अपना सम्बन्ध बनाये रखते हैं। इन्होंने यह भी स्पष्ट करने का प्रयास किया है कि एक व्यक्ति जब तक किसी समूह से अपना मनोवैज्ञानिक सम्बन्ध बनाये रखने की कोशिश करता है लेकिन किसी कारण उस समूह के किसी एक या अनेक व्यवहारों को ग्रहण नहीं कर पाता तब तक वह उसका वास्तविक सन्दर्भ समूह नहीं हो पाता।

इसके पश्चात् जब वह समूह व्यक्ति के व्यवहारों अथवा मनोवृत्तियों को प्रभावित करने लगता है, उसी समय से वह उसका सन्दर्भ समूह बन जाता है।

इस प्रकार उपरोक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि सन्दर्भ समूह एक मनोवैज्ञानिक समूह है। इसका तात्पर्य यह है कि हमारे मस्तिष्क अथवा ~~कल्प~~ कल्पना में जिस समूह की विशेषताएँ आदर्श रूप में विद्यमान होती हैं तथा हम ~~उन~~ उन्हीं का अनुकरण करने को तैयार रहते हैं। वही समूह हमारा सन्दर्भ समूह होता है। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि अलग अलग व्यक्तियों के सन्दर्भ समूह एक दूसरे से भिन्न हो सकते हैं चाहे प्रत्यक्ष रूप से वे किसी समूह के सदस्य हों। साधारणतया कि व्यक्ति की जो मनोवृत्तियाँ होती हैं अथवा वह जिस जीवन-शैली को अपने लिए उपयुक्त समझता है, उन्हीं विशेषताओं से सम्बन्धित समूह को मनोवैज्ञानिक दृष्टि से अपना सन्दर्भ समूह मानने लगता है। आर० के० मर्टन ने यह भी बताया कि कभी-कभी कोई व्यक्ति भी सन्दर्भ व्यक्ति हो सकता है। इतिहास में ऐसे कई उदाहरण हैं जो सन्दर्भ व्यक्ति के रूप में स्थापित हुए हैं। विवेकानन्द, कबीर, बी० आर० अम्बेडकर, महात्मा गाँधी, रवीन्द्रनाथ ठाकुर बहुत से लोग इनको अपना आदर्श मानकर इनके

विचारों को अपने में अपनाकर अनुसरण करना चाहते हैं। यहाँ इन्हें ही सन्दर्भ व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत करते हैं।

DR Vijant Kumar Mishra
Asst Professor (Guest Faculty)
Dept of Sociology
g mail. vijantmishra1@gmail.com
Mob. 9308451461 | 7903930105

Topic – सन्दर्भ समूह (Reference Group)
B.A Hons Part I Paper: I
Date – 10/01/2022